IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डिजिटल विभाजन: संप्रत्ययात्मक अध्ययन

पावक अग्रवाल[1]
शोध अध्येता, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर नगर (उ०प्र०)
E-Mail: pawak_phd21_edu@csjmu.ac.in

डॉ० गोपाल सिंह[2]
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर नगर (उ०प्र०)
E-Mail: gopal@csjmu.ac.in

सारांश

डिजिटल विभाजन व्यक्तियों, समुदायों और देशों के मध्य सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) तक पहुँच और उसके उपयोग के संदर्भ में अंतर को संदर्भित करता है। इस वैचारिक अध्ययन का उद्देश्य डिजिटल विभाजन की इस परिघटना के कारणों, परिणामों और संभावित समाधानों का पता लगाना है। यह अध्ययन डिजिटल विभाजन से संबंधित वर्तमान साहित्य और सिद्धांतों का अवलोकन कर इस जटिल मुद्दे की बहुआयामी प्रकृति को उजागर करने का प्रयास करता है।

अध्ययन सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षा, भौगोलिक स्थान और बुनियादी ढांचे की असमानताओं सहित डिजिटल विभाजन में योगदान देने वाले कारकों की पहचान और यह जाँच करने का प्रयास करता है कि ये कारक आईसीटी तक पहुँचने में असमानताएं कैसे पैदा करते हैं तथा यह सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक विकास के लिए व्यक्तियों के अवसरों को कैसे सीमित करता है। डिजिटल विभाजन को बढ़ाने या कम करने में क्या सरकारी नीतियों और तकनीकी प्रगति की भी भूमिका होती है।

इसके अतिरिक्त अध्ययन सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक प्रभावों पर बल देते हुए, डिजिटल विभाजन के परिणामों की व्याख्या करता है और यह जानने करने का प्रयास करता है कि आईसीटी तक सीमित पहुंच वाले व्यक्तियों और समुदायों को डिजिटल साक्षरता प्राप्त करने, डिजिटल अर्थव्यवस्था में भाग लेने, ऑनलाइन शिक्षा तक पहुंचने और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में संलग्न होने में चुनौतियों का सामना क्यों करना पड़ता है।

डिजिटल विभाजन को संदर्भित करने के लिए अध्ययन विभिन्न स्तरों पर संभावित समाधानों की पहचान करने का प्रयास करता है। यह समावेशी नीतियों, बुनियादी ढांचे के विकास में निवेश, निम्न गुणवत्ता की कनेक्टिविटी और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के महत्व पर जोर देता है। अध्ययन सरकारों, नागरिकों, सामाजिक संगठनों और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग की आवश्यकता पर भी बल देता है ताकि आईसीटी तक समान पहुँच सुनिश्चित की जा सके और डिजिटल समावेशन को बढ़ावा दिया जा सके। सामाजिक समानता, समावेशी विकास और वैश्विक कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल विभाजन को उल्लिखित करने व संज्ञान में लाने की तात्कालिक आवश्यकता को रेखांकित करता है।

कुंजी शब्द: डिजिटल विभाजन, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, तकनीकी उन्नति, सामाजिक प्रभाव, शैक्षिक प्रभाव, आर्थिक प्रभाव, समावेशी नीतियां, डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम, डिजिटल समावेशन

प्रस्तावना

तीव्र परिवर्तनकारी आधुनिक युग में परस्पर जुड़ी दुनिया में डिजिटल प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक पहुँच सामाजिक और आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण घटक बन गई है। हालांकि, प्रत्येक व्यक्ति के पास इन संसाधनों तक समान पहुँच नहीं है, जिसके परिणामस्वरूप 'डिजिटल विभाजन' संप्रत्यय अस्तित्व में आया। डिजिटल विभाजन किन्हीं व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूहों के मध्य इंटरनेट एवं डिजिटल तकनीकियों तक आसानी से पहुँच एवं उसको प्रयोग कर पाने के मध्य अंतर को संदर्भित करता है।

डिजिटल विभाजन एक जटिल प्रकरण है जिसका विभिन्न व्यक्तियों, समुदायों और देशों हेतु दूरगामी नकारात्मक प्रभाव हो सकता है। जिन व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूहों के मध्य इंटरनेट एवं डिजिटल तकनीकियों तक आसानी से पहुँच एवं उसको प्रयोग कर पाने की व्यवस्था नहीं है वे विभिन्न जानकारी, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार के अवसरों तक पहुँचने में असमर्थ हैं क्योंकि आजकल प्रत्येक क्षेत्र में डिजिटलीकरण का युग है। प्रत्येक क्षेत्र में डिजिटल सुविधाओं का व्यापक रूप से प्रयोग हो रहा है। यदि लोग इंटरनेट एवं डिजिटल तकनीकियों तक आसानी से पहुँच और प्रयोग नहीं कर पाएंगे तो उनके सामाजिक रूप से अलग-थलग होने की अधिक संभावना बानी रहेगी और वे विभिन्न सामाजिक सेवाओं से वंचित भी रह सकते हैं।

डिजिटल विभाजन केवल विकासशील देशों में नहीं वरन विकसित देशों में भी बहुत बड़ी समस्या के रूप में उभर रहा है। परन्तु डिजिटल विभाजन को सिर्फ एक समस्या के रूप में नहीं देखना चाहिए वरन इसे सरकारों और सुविधा संपन्न लोगों को एक व्यापक मुद्दे के रूप में न केवल चर्चा-परिचर्चा अपितु इसके परिप्रेक्ष्य में

समाधान निकालने के क्षेत्र में प्रयासरत रहना चाहिए। यह विकसित देशों में भी एक मुद्दा है जहाँ शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों, कम आय और उच्च आय वाले समुदायों और अल्पसंख्यक और गैर-अल्पसंख्यक आबादी के बीच पहुँच में असमानताएं मौजूद हैं। कई मामलों में, डिजिटल विभाजन असमानता के अन्य रूपों जैसे लिंग, आयु और विकलांगता से भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।

डिजिटल विभाजन के परिणाम या प्रभाव लंबे समय तक चलने वाले हो सकते हैं इसीलिए यह महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, जिन व्यक्तियों के पास डिजिटल तकनीक और इंटरनेट तक पहुँच की कमी है, वे ऑनलाइन नौकरी में आवेदनों को पूरा करने या ऑनलाइन प्रशिक्षण संसाधनों तक पहुँचने में असमर्थ हो सकते हैं। यह सार्थक रोजगार खोजने या अपने करियर को आगे बढ़ाने की उनकी क्षमता को सीमित कर सकता है। वे ऑनलाइन स्वास्थ्य देखभाल संसाधनों तक पहुँचने या टेलीमेडिसिन कार्यक्रमों में भाग लेने में भी असमर्थ हो सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप खराब स्वास्थ्य परिणाम हो सकते हैं।

इन व्यक्तिगत स्तर के परिणामों के अलावा, डिजिटल विभाजन समुदायों और देशों पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। जिन देशों में डिजिटल असमानता का उच्च स्तर है, वे वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा करने और विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। वे 'प्रतिभा पलायन (ब्रेन ड्रेन)' का भी अनुभव कर सकते हैं, क्योंकि जिन व्यक्तियों के पास डिजिटल तकनीक और इंटरनेट तक पहुँच की कमी है, वे डिजिटल दुनिया में प्रतिस्पर्धा करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में असमर्थ हैं और अन्य देशों में प्रवास करने के लिए मजबूर हैं।

डिजिटल विभाजन के महत्वपूर्ण निहितार्थों को देखते हुए इस मुद्दे को भी संज्ञान में लाने की आवश्यकता है। सरकारें, गैर सरकारी संगठन और निजी क्षेत्र के संगठन विभिन्न वंचित समुदायों में डिजिटल प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक पहुँच का विस्तार करने के लिए काम कर रहे हैं। डिजिटल साक्षरता में सुधार करने और व्यक्तियों और समुदायों को डिजिटल दुनिया में कुशल बनाने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद करने के लिए प्रशिक्षण और शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करने के लिए एक ठोस प्रयास की आवश्यकता होगी।

साहित्यवलोकन

- **डिक, जे० वी० एवं हेकर, के०** (2016) ने **'द डिजिटल डिवाइड एज ए काम्प्लेक्स एंड डायनेमिक फिनामिना'** विषय पर अध्ययन किया और पाया कि शैक्षणिक संस्थानों के लिए सभी स्तरों पर डिजिटल कौशल सीखना एक रणनीतिक उद्देश्य होगा। लेख में उद्धृत आधिकारिक अमेरिकी और डच सर्वेक्षणों से संकेत मिलता है कि वर्तमान डिजिटल कौशल स्कूलों या घरों की तुलना में कार्यस्थल पर अधिक सीखे जाते हैं। सामान्य तौर पर, औपचारिक शिक्षा पीछे ही चलती है क्योंकि साधनों की कमी होती है और

शिक्षक पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित या प्रेरित नहीं होते हैं इसीलिए डिजिटल डिवाइड को कम करना आवश्यक है।

- **डिक, जे० वी० (2013)** ने अपने पुस्तक अध्याय **'अ थ्योरी ऑफ़ डिजिटल डिवाइड'** में बताया है कि डिजिटल विभाजन को समाप्त करने का पर्याय पुरानी समस्याओं से छुटकारा पाना है जो इंटरनेट के प्रयोगकर्ताओं और स्थानीय समुदायों को लीक से हटकर सोचने से रोकते हैं, डिजिटल विभाजन को बढ़ावा देने वाली नयी चुनौतियों को पनपने से भी रोकना आवश्यक है। इक्कीसवीं सदी में डिजिटल विभाजन को समाप्त करने का मतलब है कि किसी को भी नवीन बुनियादी ढांचे, नई सेवाओं और अनुप्रयोगों को विकसित करने और संचार में सुधार करने के लिए आवश्यक संसाधनों और अवसरों को प्रदान करना जो उनकी अपनी और उनके समुदायों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा करते हैं। यह आने वाली पीढ़ियों हेतु चुनौती के रूप में है जिसे डिजिटल न्याय के तहत कम करना होगा।
- **दीवान, एस० एवं रिगिन्स, एफ० जे०** (2005) ने शोध विषय **'द डिजिटल डिवाइड: करेंट एंड फ्यूचर रिसर्च डायरेक्शंस'** पर अध्ययन किया और पाया कि सामाजिक और राजनीतिक वैज्ञानिकों और व्यावसायिक शोधकर्ताओं हेतु डिजिटल विभाजन के कारकों और भविष्य के रुझानों को समझना समान रूप से एक समृद्ध शोध का क्षेत्र बना हुआ है, इनके विश्लेषण में मजबूत क्षेत्रीय संक्रामक प्रभाव भी पाया गया है जिससे किसी देश में प्रौद्योगिकी का प्रसार क्षेत्र उस देश के पड़ोसी देशों में प्रसार से प्रभावित होता है। डिजिटल विभाजन के संदर्भ में परिणाम बताते हैं कि आज के समय में यह पर्याप्त अंतराल को संदर्भित कर रहा है जिसे समय से पूर्व हमें कम करना होगा।
- **रामसेट्टी, ए० एवं एडम्स, सी०** (2020) ने शोध विषय **'इम्पैक्ट ऑफ़ डिजिटल डिवाइड इन द एज ऑफ कोविड-19'** पर अध्ययन किया और पाया कि कोविड-19 स्वास्थ्य देखभाल के तरीकों को बदल कर रख दिया है जिसके कारण आगामी दिनों में तकनीकी के एकीकरण और उस पर निर्भरता बढ़ती जाएगी। सामाजिक और स्वास्थ्य मुद्दों की जटिलता को देखते हुए स्वास्थ्य संबंधी प्रौद्योगिकियों द्वारा सभी आबादी में लाभों को पूरी तरह से सुनिश्चित करने से पहले उसकी पूर्णतः जाँच किया जाना आवश्यक है। अन्यथा, प्रगति के बावजूद, हम स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच और परिणामों में असमानताओं को बढ़ाना अनावश्यक रूप से जारी रखेंगे।

अध्ययन के उद्देश्य

1. डिजिटल विभाजन के संप्रत्यय का अध्ययन करना।
2. डिजिटल अधिगम प्रक्रिया में निर्दिष्ट असमानता का अध्ययन करना।
3. डिजिटल साधनों और इंटरनेट की उपयोगिता में वृद्धि करने के लिए नीतियों और प्रयासों का मूल्यांकन करना।
4. डिजिटल विभाजन के कारणों और प्रभावों को समझना एवं उसका विश्लेषण करना।
5. डिजिटल विभाजन से सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक प्रभाव की विवेचना करना।

डिजिटल विभाजन क्या है?

'डिजिटल विभाजन' शब्द सामाजिक-आर्थिक स्तरों में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों, घरों, व्यापारों और भौगोलिक क्षेत्रों के बीच के अंतर को संदर्भित करता है। उनके द्वारा सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटी) की पहुँच के अवसरों के साथ-साथ उनके इंटरनेट के उपयोग के संबंध में जानकारी प्रदान करता है। डिजिटल विभाजन विभिन्न देशों में विभिन्नताओं को दर्शाता है। यह विभिन्न व्यक्तियों या व्यापारों में इंटरनेट का उपयोग करने की क्षमता के मध्य अत्यंत भिन्नता प्रदर्शित करती है इसीलिए मूलभूत दूरसंचार सेवाएं अवसंरचनाओं तक पहुँच के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

डिजिटल विभाजन शब्द का प्रयोग व्यक्तियों या समूहों के बीच सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटी) के प्रयोग व पहुँच आदि के मध्य अंतर का वर्णन करने के लिए किया जाता है इनमें वे भी शामिल हैं जिनके पास डिजिटल प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक पहुँच तो है पर वे किन्हीं कारणों से उनका प्रयोग नहीं कर पाते हैं। यह अंतर कई स्तरों पर मौजूद हो सकता है, जिसमें प्रौद्योगिकी, इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल साक्षरता तक पहुँच भी शामिल है। डिजिटल विभाजन एक जटिल मुद्दा है जिसके महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव हैं, क्योंकि यह मौजूदा असमानताओं को बढ़ा सकता है और उन लोगों के लिए अवसरों को सीमित कर सकता है जिनके पास डिजिटल संसाधनों तक पहुँच की कमी है।

डिजिटल विभाजन न केवल विकासशील देशों में बल्कि विकसित देशों में भी एक समस्या है जहां शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों, कम आय और उच्च आय वाले समुदायों और अल्पसंख्यक और गैर-अल्पसंख्यक आबादी के बीच पहुँच में असमानताएं मौजूद हैं। जिन व्यक्तियों के पास डिजिटल प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक पहुँच की कमी है, वे जानकारी, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और रोजगार के अवसरों तक पहुँचने में असमर्थ हैं। वे सामाजिक रूप से अलग-थलग होने की अधिक संभावना रखते हैं और उनकी सामाजिक सेवाओं और नेटवर्क तक पहुँच सीमित होती है।

डिजिटल विभाजन को कम करने के लिए सरकारों, गैर सरकारी संगठनों और निजी क्षेत्र के संगठनों से डिजिटल प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक पहुँच का विस्तार करने, डिजिटल साक्षरता में सुधार करने और व्यक्तियों और समुदायों को डिजिटल दुनिया में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद करने के लिए प्रशिक्षण और शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करने के लिए एक ठोस प्रयास की आवश्यकता होती है। विकसित और विकासशील देशों के बीच इंटरनेट कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचे में अंतर को भरने के प्रयास भी चल रहे हैं। डिजिटल विभाजन को कम करके, हम यह सुनिश्चित करने में सहायता कर सकते हैं कि हर किसी के पास उन संसाधनों और अवसरों तक समान पहुँच है जो डिजिटल प्रौद्योगिकी और इंटरनेट की सेवा प्रदान कर सकते हैं।

डिजिटल अधिगम में निर्दिष्ट असमानता

डिजिटल अधिगम प्रक्रिया में निर्दिष्ट असमानता एक महत्वपूर्ण विषय है जो कि सूचना एवं संचार तकनीकी विकास के क्षेत्र में विद्यालयों और छात्रों के बीच उत्पन्न होती है। इसका मतलब है कि विद्यार्थियों के बीच डिजिटल उपकरणों का उपयोग करने में असमानता, जिसके कारण कुछ छात्रों को इस नई तकनीकी माध्यम का समय और संसाधनों की उपलब्धता में परेशानी होती है। यह अनुपलब्धता कई कारकों के कारण होती है। डिजिटल सामग्री की कमी उनमें से एक है जिससे तात्पर्य विद्यार्थियों के पास उचित डिजिटल सामग्री की कमी से है। आवश्यक सामग्री के उपलब्ध न होने के कारण, कुछ छात्र नवीनतम शैक्षणिक संसाधनों और अद्यतन तकनीकियों का उपयोग नहीं कर पाते हैं। इसके अलावा तकनीकी विरक्ति, अधिक लागत, अनुकरण में कठिनाइयाँ और तकनीकी ज्ञान की कमी भी असमानता के मुख्य कारण हो सकते हैं।

इस समस्या का समाधान करने के लिए, सरकारों को सामरिक और आर्थिक संसाधनों को विकसित करने और विद्यार्थियों के लिए सुगम डिजिटल पहुँच सुनिश्चित करने में आने वाली कठिनाइयों पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही, शैक्षिक संस्थाओं और शिक्षकों को उचित डिजिटल सामग्री उपलब्ध करानी चाहिए ताकि सभी छात्रों को इससे बेहतर लाभ मिल सके। इसके अलावा, शिक्षा नीतियों में स्थानीय परिवेश के आवश्यकतानुसार सामग्री और प्रशिक्षण के विषय में व्यवस्था सुनिश्चित करना भी आवश्यक है। इन सभी पहल के माध्यम से डिजिटल अधिगम में असमानता को कम किया जा सकता है।

डिजिटल साधनों और इंटरनेट की उपयोगिता में वृद्धि कारक नीतियों और प्रयासों का मूल्यांकन

शिक्षा में डिजिटल साधनों और इंटरनेट के उपयोग को बढ़ाने के लिए नीतियों और प्रयासों का मूल्यांकन भी महत्वपूर्ण है। आधुनिक युग में डिजिटल संसाधनों से शिक्षा क्षेत्र को सुधारने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त हो रहा है जो छात्रों के लिए सूचनाओं की प्राप्ति, अध्ययन सामग्री के उपयोग और वैश्विक संपर्क स्थापित करने में सहायक हो सकता है।

इस संदर्भ में, सरकारों को स्पष्ट व लचीली नीतियों और नवाचारी दृष्टिकोणों की आवश्यकता होती है जिससे शैक्षिक संस्थानों में डिजिटल संसाधनों का सही उपयोग करने और इंटरनेट के संभावित लाभों को अधिकतम स्तर तक पहुँचाने में सहायता हो सके। इसके अतिरिक्त, छात्रों में तकनीकी कुशलता और डिजिटल साक्षरता विकसित करने के लिए प्रशिक्षण और संसाधनों की आवश्यकता होती है।

डिजिटल शिक्षा के प्रयासों में असमानता का पता करने के लिए, नीतियों में समानता पर प्राथमिकता देनी चाहिए और समान पहुँच सुनिश्चित करनी चाहिए। गरीब और वंचित समुदायों को भी उचित प्रशिक्षण, संसाधन, और सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे भी इस डिजिटलीकरण का लाभ उठा सकें। सरकारी संस्थानों को अधोसंरचना विकास, सुविधाओं का अद्यतन और डिजिटल एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए उचित दिशा में निवेश करने की आवश्यकता होती है।

डिजिटल विभाजन के कारण एवं प्रभाव

डिजिटल विभाजन अनेक कारकों की वजह से हो सकता है। पहला, आर्थिक-सामाजिक असमानता क्योंकि कम आय वाले घरों के लोगों को सीमित संसाधनों और सीमित सामर्थ्य के कारण डिजिटल प्रौद्योगिकियों तक पहुँच बनाने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। दूसरा, भौगोलिक स्थान और बुनियादी संरचना भी डिजिटल विभाजन में योगदान देते हैं, क्योंकि ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में पर्याप्त इंटरनेट कनेक्टिविटी और अवसंरचना में कमी हो सकती है। तीसरा, शिक्षा में असमानताएं और डिजिटल साक्षरता की कमी के कारण व्यक्ति को डिजिटल उपकरणों का सफलतापूर्वक उपयोग करने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा आयु, लिंग और अक्षमता जैसे जनसांख्यिकीय कारक डिजिटल विभाजन को और भी बढ़ा देते हैं।

डिजिटल विभाजन का व्यापक प्रभाव व्यक्ति, समुदाय और समाज को होता है। जो लोग आर्थिक कारणों से डिजिटल प्रौद्योगिकियों की पहुँच से वंचित होते हैं, उन्हें रोजगार के सीमित अवसरों और ऑनलाइन बाजार और विभिन्न वित्तीय सेवाओं और सुविधाओं तक कम पहुँच का सामना करना पड़ता है। विभाजन सामाजिक रूप से मौजूदा असमानताओं को और भी बढ़ा सकता है। यह सामाजिक उन्नयन को रोकता है और सामाजिक बहिष्कार को बढ़ाने में सहायता करता है। इसके साथ ही डिजिटल विभाजन शैक्षिक परिणामों को भी प्रभावित

करता है, क्योंकि ऑनलाइन संसाधनों और डिजिटल अधिगम के उपकरणों तक पहुँच न होने के कारण छात्र अपने डिजिटल साक्षर साथियों के समान प्रगति करने में समस्या का सामना करते हैं। शिक्षा के अवसरों में इन अंतरों के कारण शैक्षिक उपलब्धियों और भविष्य की संभावनाओं में असमानता बढ़ सकती है।

डिजिटल विभाजन का संभावित समाधान

डिजिटल विभाजन को कम करने के लिए बहु-पक्षीय दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। सरकारों और नीतिनिर्माताओं को अवसंरचना विकास में निवेश, अपर्याप्त क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड सुविधा का विस्तार और डिजिटल प्रौद्योगिकियों को कम खर्चीला बनाने हेतु अनुदान या प्रोत्साहन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। शिक्षण संस्थानों को डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों को प्रचारित व प्रसारित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जिससे व्यक्ति को आवश्यक कौशल से परिपूर्ण करके डिजिटल उपकरणों का सफलतापूर्वक इस्तेमाल करने की क्षमता सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त समुदाय-आधारित पहल और सार्वजनिक-निजी साझेदारी द्वारा डिजिटल समावेशन करके विभाजन को कम करने में सहायता कर सकते हैं।

डिजिटल विभाजन के सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक प्रभाव

डिजिटल विभाजन सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक तत्वों पर व्यापक प्रभाव डालता है-

सामाजिक प्रभाव: डिजिटल विभाजन समाज में मौजूदा असमानताओं को बढ़ा सकता है। डिजिटल तकनीकों तक पहुँच न होने के कारण, लोग सामाजिक और सांस्कृतिक समृद्धि से वंचित रह सकते हैं। डिजिटल संघर्ष से ग्रस्त व्यक्तियों को सामाजिक आवश्यकताओं, सेवाओं हेतु ऑनलाइन पहुँच सुनिश्चित नहीं कर पाता है। यह असमानताओं को बढ़ावा देता है और सामाजिक समावेशन को कम करता है।

शैक्षिक प्रभाव: डिजिटल विभाजन शिक्षा क्षेत्र में भी गहरा प्रभाव डालता है। डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट के उपयोग की अनुपलब्धता के कारण, विद्यार्थियों को नवीनतम ज्ञान, विश्लेषणात्मक विचार, और संवादमूलक शिक्षा से वंचित रह सकते हैं। डिजिटल विभाजन से प्रभावित होने वाले छात्रों के लिए अध्ययन सामग्री, वीडियो पाठ, ऑनलाइन संसाधनों और शिक्षा संबंधित सुविधाओं का उपयोग करना दुर्ग्राह्य होता है। इससे उनके शैक्षिक अवसर और भविष्य के अवसरों पर असर पड़ता है और यह उन्हें तकनीकी रूप से आवश्यक कौशलों से वंचित कर सकता है।

आर्थिक प्रभाव: डिजिटल विभाजन आर्थिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। डिजिटल संसाधनों और इंटरनेट के उपयोग के अभाव वाले लोगों को व्यापारिक अवसरों की सीमा कम हो सकती है और ऑनलाइन बाजारों और वित्तीय सेवाओं के पहुँच में भी कटौती होती है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है और उन्हें

सामरिक और आर्थिक अवसरों का उचित लाभ नहीं मिल पाता है। डिजिटल विभाजन वित्तीय समावेशन में असमानता को बढ़ावा देता है और आर्थिक समावेशन को कम कर सकता है।

निष्कर्ष

डिजिटल विभाजन को कम करने हेतु विभिन्न हितधारकों की एक समग्र और सहकारी दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी। जिसमें सरकारें दो तत्वों के मध्य पुल बांधने जैसी महत्वपूर्ण भूमिका में होती हैं। उन्हें भूमि विकास में निवेश करके, इंटरनेट कनेक्टिविटी का विस्तार करके, और डिजिटल समावेशन को प्रोत्साहित करने के नीतियों को लागू करके विभाजन को कम करने का प्रयास करना चाहिए। डिजिटल प्रौद्योगिकियों की संभावनाओं को अवसरवादी बनाने हेतु अनुदान, प्रोत्साहन और विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से संभावनाओं को सुलभ कराना चाहिए।

शैक्षिक संस्थानों को भी डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों को प्राथमिकता देनी चाहिए, जिससे व्यक्ति डिजिटल उपकरणों को सही ढंग से नेविगेट करने और उसे उपयोग हेतु आवश्यक कौशल प्राप्त करें। साथ ही, समुदाय संगठन और सार्वजनिक-निजी साझेदारी, उपस्थित व वांछित स्थानों में प्रशिक्षण, समर्थन और तकनीक तक पहुँच प्रदान करके इस विभाजन को कम करने में योगदान कर सकते हैं।

डिजिटल समावेशन की महत्ता और डिजिटल विभाजन के परिणामों की जागरूकता बढ़ाना अत्यावश्यक है। कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि, ग्रामीण क्षेत्रों और विविध जनजातियों के लोगों के संघर्ष को कम करने के लिए विविध प्रयास किए जाने चाहिए।

सरकार, शैक्षिक संस्थान, विभिन्न समुदाय संगठन और व्यक्तियों के मध्य सहयोग बढ़ाकर, हम एक समावेशी और समानांतर डिजिटल समाज बनाने की ओर बढ़ सकते हैं। डिजिटल विभाजन को कम करने से न केवल आर्थिक अवसरों को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि सामाजिक समावेशन, शैक्षिक प्रगति और सम्पूर्ण कल्याण को भी प्रोत्साहित किया जा सकेगा। डिजिटल युग में किसी को भी पीछे न छोड़ना हम सबका समान दायित्व है, और हम सब साथ मिलकर इस कमी को दूरकर सभी के लिए एक समावेशी भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

Cullen, R. (2001). Addressing the digital divide, Online Information Review, 25 (5), 311-320. https://doi.org/10.1108/14684520110410517

Ramsetty, A., & Adams, C. (2020). Impact of the digital divide in the age of COVID-19. *Journal of the American Medical Informatics Association*, *27*(7), 1147–1148. https://doi.org/10.1093/jamia/ocaa078

Riggins, F., & Dewan, S. (2005). The Digital Divide: Current and Future Research Directions. *Journal of the Association for Information Systems*, *6*(12), 298–337. https://doi.org/10.17705/1jais.00074

Gupta, A., & Sharma, R. (2021). Digital Education: An Engineering Revolution in the Indian Education System. Ministry of Education, Government of India.

Gupta, R., & Sharma, P. (2021). Causes and Impact of Digital Divide. Journal of Digital Inclusion, 7(2), 123-138.

Ramsetty, A., & Adams, C. (2020). Impact of the digital divide in the age of COVID-19. *Journal of the American Medical Informatics Association*, *27*(7), 1147–1148. https://doi.org/10.1093/jamia/ocaa078

Smith, J., Johnson, K., Anderson, L., & Brown, M. (2021). Digital Divide: A Conceptual Study. Journal of Information Technology Studies, 15(2), 123-145

The Organisation for Economic Co-operation and Development (Ed.). (2021). *UNDERSTANDING THE DIGITAL DIVIDE* [English]. OECD Publications, Paris, France. Retrieved January 28, 2023, from https://www.oecd.org/sti/1888451.pdf

Norris, P. (2017). Digital divide: Civic engagement, information poverty, and the Internet worldwide. Cambridge University Press.

Smith, A., & Ling, R. (2019). The digital divide: A complex and expanding phenomenon. In M. Robinson & Y. Wang (Eds.), Handbook of Research on Comparative Approaches to the Digital Age Revolution in Europe and the Americas (pp. 23-38). IGI Global.

Van Dijk, J. A. (2019). The digital divide: Consequences for social inclusion. In The Oxford Handbook of Digital Technology and Society (pp. 213-226). Oxford University Press.

Warschauer, M., & Matuchniak, T. (2018). Learning in the cloud: How (and why) to transform schools with digital media. Teachers College Press.